हज़रत अली अलैहिस्सलाम

आयतुल्लाह सैय्यिद मुहम्मद हुसैन तबातबाई (ताबा सराह)
मुतरजिम : जनाब असर नक़वी जायसी

अमीरुलमोमिनीन हज़रत अली अलैहिस्सलाम सरदारे बनी हाशिम हज़रत अबुतालिब के फ़रज़न्द थे। हज़रत अबुतालिब पैग़म्बरे इस्लाम (स0) के चचा और आप (स0) के सरपरस्त थे। हज़रत अबुतालिब ने हज़रत मुहम्मद (स0) को अपने घर लाकर अपने बेटे की तरह उनकी परवरिश की। पैग़म्बरे इस्लाम के मबअूस बरिसालत होने के बाद आप हज़रत मुहम्मद (स0) की मदद करते रहे, उन आफात को रद्द करने में मसरूफ रहे जो अरब बाग़ियों और ख़ास तौर से क़बीलए क़ुरैश के लोगों की जानिब से आप पर ढाई जाती थीं। मुअ्तबर मज़हबी रवायात के मुताबिक़ हज़रत अली (अ0) पैग़म्बरे इस्लाम (स0) के मबअूस बरिसालत होने के दस साल क़ब्ल पैदा हुए। जब आप छः साल के थे तो मक्का और इसके अतराफ में क़हत पड़ जाने की वजह से पैग़म्बरे इस्लाम (स0) ने जो कि उनके चचेरे भाई थे हज़रत अली (अ0) से कहा कि वह अपने बाप का घर छोड़कर उनके घर आकर रहने लगें। वहाँ आपकी तरबियत बराहे रास्त पैग़म्बरे इस्लाम (स0) की निगरानी और सरपरस्ती में हुई।

चन्द साल बाद मबअूस बरिसालत होने और पहली बार ग़ारे हिरा में वही हासिल करने के बाद जब रसूले इस्लाम (स0) ग़ारे हिरा छोड़कर शहर में अपने घर वापस आ रहे थे तो रास्ते में आप (स0) की मुलाक़ात हज़रत अली (अ0) से हुई। आप (स0) ने हज़रत अली (अ0) को पूरा वाक़ेआ सुनाया और हज़रत अली (अ0) ने नया मज़हब क़ुबूल कर लिया।
(मनाक़िबे ख़्वारज़मीं पेज–16–22)

फिर जब एक मजमे में रसूले इस्लाम (स0) ने अपने क़राबतदारों को यकजा करके उन्हें अपना मज़हब क़ुबूल करने की दावत दी थी और यह एलान किया था कि जो पहला शख़्स उनकी आवाज़ पर लब्बैक कहेगा वह उनका वकील, नायब और वारिस होगा। तो उस वक़्त जिस तन्हा शख़्स ने अपनी जगह से खड़े होकर आप (स0) का मज़हब क़ुबूल किया था वह हज़रत अली (अ0) थे।

और हज़रत मुहम्मद ने आपके क़ुबूले मज़हब की तौसीक़ की थी। इस तरह इस्लाम में हज़रत अली (अ0) वह पहले शख़्स हैं जिन्होंने सबसे पहले मज़हबे इस्लाम क़ुबूल किया और रसूल (स0) के सहाबियों में वाहिद फ़र्द हैं जिन्होंने सिवाय अल्लाह के कभी किसी और की इबादत नहीं की।

हज़रत अली (अ0) हमेशा पैग़म्बरे इस्लाम (स0) की सोहबते बाबरकत में रहे यहाँ तक कि आप (स0) मक्का से हिजरत करके मदीने चले गये। शबे हिजरत जब कुफ्फार ने रसूले इस्लाम (स0) के घर का मुहासरा कर रखा था और शब के पिछले पहर आपके घर पर हमला करके सोते में आप (स0) के टुक्ड़े कर देने का तहैइय्या कर रखा था, और रसूले इस्लाम (स0) ने अपना घर छोड़कर मदीने का रुख़ किया था तो उस वक़्त हज़रत

अली (अ0) आप (स0) के बिस्तर पर सोये थे।

रसूले इस्लाम (स0) के मक्का छोड़ने के बाद उनके मशवरे के मुताबिक़ हज़रत अली ने कुफ्फार को उनकी अमानतें और माल व अस्बाब वापस कर दिया जो उन्होंने रसूल इस्लाम (स0) के पास रख छोड़ा था। इसके बाद हज़रत अली (अ0) अपनी वालिदए गिरामी, रसूल इस्लाम (स0) की साहबज़ादी और दीगर दो ख़्वातीन को लेकर मदीने चले गये। मदीने में भी हज़रत अली उमूमी और ख़ुसूसी तौर से हमेशा पैग़म्बरे इस्लाम (स0) की सोहबत में रहे, रसूले इस्लाम (स0) ने अपनी और अपनी शरीके हयात हज़रत खदीजतुल कुबरा की चहीती साहबज़ादी हज़रत फातिमा ज़ेहरा (अ0) को हज़रत अली (अ0) के अक़्द में दिया और अपने साथियों में से हज़रत अली को अपने भाई की हैसियत से मुन्तख़ब किया।

हज़रत अली (अ0) सिवाय ग़ज़वए तबूक के उन तमाम ग़ज़वात में शरीक रहे जिनमें रसूले इस्लाम (स0) ने हिस्सा लिया था। क्योंकि ग़ज़वए तबूक के वक़्त रसूले इस्लाम (स0) ने हज़रत अली (अ0) को मदीने में अपनी जगह पर रहने का हुक्म दिया था।

आपने न तो किसी जंग में शिकस्त खाई और न ही किसी दुश्मन के मुक़ाबले से मुँह फेरा। हज़रत अली (अ0) ने पैग़म्बरे इस्लाम (स0) की नाफरमानी कभी नहीं की, जिसकी बिना पर रसूले इस्लाम (स0) ने कहा था : ''न तो अली (अ0) कभी हक़ से जुदा हुए, और न हक़ अली (अ0) से जुदा हुआ''

पैग़म्बरे इस्लाम (स0) की वफात के दिन हज़रत अली (अ0) की उम्र तेंतीस साल थी।

अगरचे हज़रत अली (अ0) मज़हबी उमूर में सबके आगे थे और रसूले इस्लाम (स0) के पुराने सहाबियों में से थे। मगर उन्हें इस बिना पर ख़िलाफत के हक़ से महरूम कर दिया गया कि उनकी उम्र कम है, नीज़ यह कि अवाम में उनके बेशुमार दुश्मन भी हैं जिनके अज़ीज़ों को रसूले इस्लाम (स0) के साथ मुतअद्दिद जंगों में उन्होंने क़त्ल किया है। इसका नतीजा यह निकला कि हज़रत अली (अ0) अवामी उमूर से मुकम्मल तौर से कट कर रह गये। हज़रत अली (अ0) ने अपने घर में लायक़ अफ़राद को रूहानियत की तरबियत देने का सिलसिला शुरु कर दिया इस तरह उन्होंने पहले उन तीन खुलफा की मुद्दते ख़िलाफत के पच्चीस साल गुज़ार दिये, जिन्होंने पैग़म्बरे इस्लाम (स0) की जा नशीनी की थी। जब तीसरे ख़लीफा को क़त्ल कर दिया गया तो अवाम ने आप से बैअत कर ली और बहैसियत ख़लीफा के आपका इन्तिख़ाब किया।

अपनी ख़िलाफत के इबतेदाई चार साल और नौ महीनों में हज़रत अली (अ0) ने रसूले इस्लाम (स0) की सुन्नत पर अमल किया और अपनी ख़िलाफत को रूहानी तहरीक की शक्ल दी। नीज़ बहुत सी दूसरी शक्लों की इबतेदा की। फितरी तौर से यह तबदीलियाँ उन मख़सूस जमाअतों के हक़ में नहीं थीं जिन्हें सिर्फ अपने मफाद से ग़र्ज़ थी। इसके नतीजे में सहाबा के एक गिरोह ने (जिनमें तलहा और ज़ुबैर भी शामिल थे और जिन्हें उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा और बिलख़ुसूस मुआविया की हिमायत हासिल थी) तीसरे ख़लीफा हज़रत उसमान के क़त्ल का शाख़िसाना लेकर मुख़ालफीन की सफ में अपना सर उठाया, और हज़रत अली (अ0) के ख़िलाफ बग़ावत बुलन्द कर दी।

इस सिविल नाफरमानी को रोकने के लिए

हज़रत अली (अ0) ने बसरा के नज़दीक तलहा और जुबैर के ख़िलाफ एक जंग लड़ी, जिसे ''जंगे जमल'' के नाम से याद किया जाता है। और जिसमें उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा भी मुलव्विस थीं। इसके बाद उन्होंने इराक़ और शाम की सरहद पर मुआविया से एक दूसरी जंग की, जो जंगे सिफ्फीन के नाम से मशहूर है, और जो डेढ़ साल तक जारी रही। आपने नहरवान में ख़वारिज से भी जंग की जो जंगे नहरवान के नाम से जानी जाती है। नतीजे में हज़रत अली (अ0) की ख़िलाफत के बेशतर अय्याम ख़ानाजंगी पर क़ाबू पाने की नज़र हो गये। आख़िर में 19 रमज़ानुल मुबारक 40 हिजरी को सुबह को एक ख़ारजी की तलवार से आप मस्जिदे कूफा में ज़ख़्मी हो गये और 21 रमज़ान की शब में एक शहीद की हैसियत से इस दारे फानी से कूच कर गये।

सभी दोस्तों और दुश्मनों के मुताबिक़, एक मुकम्मल इन्सान की हैसियत से हज़रत अली में कोई कमी नहीं थी, और रसूले इस्लाम (स0) के तरबियत याफ्ता सहाबियों में हज़रत अली इस्लामी बसीरत का बेहतरीन नमूना थे। आपकी शख़्सियत से मुताल्लिक़ जो बहस माआरज़े वजूद में आयी और इस मौज़ूअ के ऊपर शीओं और सुन्नियों और दीगर मज़ाहिब के अफ़राद ने जो किताबें तसनीफ कीं उनकी तारीख़ में आप जैसी मुम्ताज़ शख़्सियत किसी और मज़हबी फ़र्द की मुश्किल से ही नज़र आयेगी। रसूले इस्लाम (स0) के सहाबा में इल्म व मआरिफ के नुक़्तए नज़र से आप सबसे ज़ियादा क़ाबिल थे और बिलख़ुसूस मुसलमानों में आपका कोई सानी नहीं था। आलिमाना मबाहिस में, इस्लाम में आप पहले शख़्स थे जिन्होंने मनतिक़ी मुज़ाहेरों के दरवाज़े खोले, नीज़ रूहानियत और मआरिफे इलाहिया पर बहस व मुबाहेसा का एहतेमाम किया। आपने कुर्आन के मख़्फ़ी पहलुओं पर बहस की। नीज़ कुर्आन के उसलूब को महफ़ूज़ रखने के लिए अरबी क़वाएद वज़अ की। तमाम अरबों में आपकी तक़ारीर बड़ी फसीह व बलीग़ होती थीं।

हज़रत अली (अ0) की हिम्मत व जुराअत मिसाली थी। पैग़म्बरे इस्लाम (स0) की हयात में और उनकी वफात के बाद आप ने जितनी जंगों में हिस्सा लिया कभी ख़ौफज़दा नहीं हुए बल्कि ओहद, हुनैन, ख़ैबर और ख़न्दक़ जैसी बहुत सी जंगों में जबकि रसूले इस्लाम (स0) के मददगार और मुसलमानों की फौज ख़ौफज़दा हो गयी थी या परागन्दा होकर भाग खड़ी हुई थी आपने कभी दुश्मनों को अपनी पीठ नहीं दिखायी हज़रत अली (अ0) जंग में कभी कोई जंगी मुआहेदा करके तन्हा जंग से बचकर बाहर नहीं आये। जंगी क़वानीन का भरपूर एहतेराम करते हुए आपने कभी किसी कमज़ोर दुश्मन पर वार नहीं किया और न जंग से फरार इख़्तियार करने वाले किसी सिपाही का पीछा किया। आपने कभी दुश्मन पर अचानक हमला नहीं किया और न उन पर पानी बन्द किया। जंगे ख़ैबर में क़िले पर हमले के वक़्त क़िले के दरवाज़े के छल्ले को पकड़कर मिन्टों में उसे एक तरफ उछालकर आप ने इस वाक़ेआ को तारीख़ के औराक़ पर सब्त कर दिया था। जिस दिन मक्का फतह हुआ रसूले इस्लाम (स0) ने हुक्म दिया कि वहाँ पर नसब तमाम बुतों को तोड़ दिया जाये। मक्के में हुबल सबसे बड़ा बुत था, जो पत्थर के एक बड़े मुजस्समे की शक्ल में खाना–ए–काबा की छत पर नसब था। रसूले इस्लाम (स0) के हुक्म की तामील में हज़रत अली (अ0) रसूले इस्लाम (स0) के कन्धों पर खड़े हुए और खाना–ए–काबा की छत पर चढ़कर हुबल

को उखाड़ लिया और उसे नीचे फेंक दिया।

अपने मज़हबी तक़्वे और अल्लाह की इबादत में भी हज़रत अली का कोई सानी नहीं था। बाज़ अफ़राद की इस शिकायत के जवाब में कि अली (अ0) उनसे नाराज़ हैं पैग़म्बरे इस्लाम (स0) ने जवाब दिया कि : ''अली की सरज़निश न करों क्योंकि वह खुदाई इन्बेसात और परागन्दगी के आलम में हैं।''

रसूले इस्लाम (स0) के एक सहाबी अबुदरदा ने मदीने के खजूरों के बाग़ में एक दिन हज़रत अली (अ0) के जिस्म को इस तरह ज़मीन पर पड़ा हुआ देखा जैसे वह कोई सख़्त लकड़ी हो। वह हज़रत अली (अ0) के घर गये ताकि वह उनकी शरीके हयात और पैग़म्बरे इस्लाम (स0) की साहेबज़ादी को इसकी इत्तेला दें और इज़्हारे ताज़ियत करें। पैग़म्बरे इस्लाम (स0) की साहेबज़ादी ने कहा कि ''अली का इन्तेक़ाल नहीं हुआ है, बल्कि वह ख़ौफे खुदा से बेहोश हो गये हैं। उन पर ऐसी कैफियत अकसर तारी हो जाती है।''

ज़रूरतमन्द और मुफलिस असहाब पर हज़रत अली (अ0) की नवाज़िशों के बहुत से क़िस्से मशहूर हैं। नीज़ उन लोगों पर रहम व करम की कहानियाँ भी हैं जो परेशाँ हाली और फाक़ा कशी का शिकार थे। हज़रत अली (अ0) जो कुछ कमाते थे वह ग़रीबों और ज़रूरत मन्दों की मदद पर ख़र्च कर देते थे और खुद तन्गी में और सदगी के साथ अपनी ज़िन्दगी बसर करते थे। हज़रत अली (अ0) को काश्तकारी से बेहद लगाव था, और वह अपना बेशतर वक़्त कुओं की खुदाई, शजरकारी, और खेतों की सिंचाई में सर्फ करते थे। लेकिन उन्होंने जो काश्त की थी और जो कुएँ तामीर किये थे, उन्हें ग़रीबों के लिये वक़्फ कर दिया था। आपके इन अतियात की मालियत जो ''अतियाते अली'' के नाम से मशहूर थे, आपकी उम्र के अवाख़िर में 24 हज़ार तलाई दीनार थी, जो कि एक क़ाबिले ज़िक्र रक़म है।

□□□

(बक़िया इमाम मुहम्मद बाक़िर अ0)...

मगर दिल में हज़रत के साथ अदावत में और इज़ाफा हो गया।

वफात : सलतनते शाम को जितना हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0) की जलालत और बुज़ुर्गी का अन्दाज़ा होता गया उतना ही आपका वजूद उनके लिये नाक़ाबिले बर्दाश्त महसूस होता रहा। आख़िर आप को उस ख़ामोश ज़हर के हरबे से जो अक्सर सलतनते बनी उमय्या की तरफ से काम में लाया जाता रहा था, शहीद करने की तदबीर कर ली गयी। वह एक ज़ीन का तोहफा था जिसमें ख़ास तदबीरों से ज़हर पोशीदा किया गया था और जब हज़रत इस ज़ीन पर सवार हुए तो ज़हर जिस्म में सरायत कर गया चन्द रोज़ करब व तकलीफ में बिस्तरे बीमारी पर गुज़रे और आख़िर सात ज़िलहिज्जह 114 हिजरी को 57 बरस की उम्र में वफात पायी।

आपको हस्बे वसीय्यत तीन कपड़ों का कफन दिया गया जिनमें से एक वह यमनी चादर थी जिसे ओढ़ कर आप रोज़े जुमा नमाज़ पढ़ते थे और एक वह पैराहन था जिसे आप हमेशा पहने रहते थे और जन्नतुल बक़ीअ में उसी कुब्बे में कि जहाँ इमाम हसन (अ0) और इमाम ज़ैनुलआबेदीन (अ0) दफन हो चुके थे हज़रत भी दफन किये गये। □□□